IJAER/November-December 2019/Volume-8/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

राजस्थान की प्रमुख घुमन्तु जनजातियां

(एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ. लोकेश पारगी
श्री योगेश्वर स्नातकोत्तर महाविद्यालय
आमलीपाड़ा, सज्जनगढ़, जि. बांसवाड़ा।

राजस्थान भारत के 6 जनजाति बहुल राज्यों में से एक है। यहां मुख्यतः भील, मीणा, गरासिया, डामोर और सहारिया जनजातियां निवास करती है। वैसे तो राजस्थान में कुल 12 प्रकार की जनजातियां निवास करती है। जिनमें कथौड़ी, कंजर, सांसी और बावरिये आदि घुमन्तु जनजातियां है। घुमन्तु जनजातियों की आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति अत्यधिक दयनीय है। वे अपने परिवार का भरण पोषण करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते हुए अपना भरण पोषण करती है। इन जनजातियों का अपना परम्परागत व्यवसाय समाप्त हो गया है। वर्तमान में वे विभिन्न प्रकार के व्यवसायों से अपना जीवन निर्वाह कर रहे है।

कथौड़ी जनजाति

राज्य की कुल आबादी का 52 प्रतिशत कथौड़ी जनजाति उदयपुर जिले की कोटडा, झाडोल एवं सराड़ा पंचायत समितियों में बसे हुए है। शेष मुख्यतः डूंगरपुर, बारां एवं झालावाड़ में बसे हुए है। ये महाराष्ट्र के मूल निवासी है। खेर के पेड़ से कत्था बनाने में दक्ष होने के कारण वर्षो पूर्व उदयपुर के कत्था व्यवसायियों ने इन्हें यहां लाकर बसाया। कत्था तैयार करने में दक्ष होने के कारण से ये कथौड़ी कहलाएं।

2011 की जनगणना के अनुसार कथौड़ी जनजाति की कुल आबादी 4833 है। राज्य सरकार द्वारा पर्यावरण की दृष्टि से कथौड़ी के कार्यो को प्रतिबन्धित घोषित कर दिये जाने के कारण कथौड़ी लोगों की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई। आज ये जनजाति समुदाय जंगल से बांस, महुआ, शहद, सफेद मूसली, गौंद, कोयला एकत्र कर और चोरी–चुपके लकड़ियों को काटकर बेचने तक सीमित हो गई है। इस जनजाति का शैक्षिक एवं आर्थिक

स्तर बहुत ही न्यून है। कथौड़ी जंगलों व पहाड़ों में रहने वाली ऐसी जनजाति है जो स्वभावतः अस्थाई एवं घुमन्तु जीवन जीती आ रही है। कथौड़ी लोग घास–फूस, पत्तों एवं बांसों से बने झोंपड़ों जिन्हें खोलरा कहते है में रहते है। इनके परिवार आत्मकेन्द्रित होते है।

प्रमुख विशेषताएं

1. कथौड़ी जंगलों व पहाड़ों में रहने वाली ऐसी जनजाति है, जो स्वभावतः अस्थाई एवं घुमन्तु जीवन जीती है।
2. खेर के जंगलों से कत्था तैयार करने के अलावा मछली पकड़ना, कृषि कार्य से यह जनजाति अपना गुजर बसर करती है।
3. परिवार आत्मकेन्द्रित होते है।व्यक्ति शादी होते ही अपने मूल परिवार से अलग हो जाता है। नाता करना, विवाह विच्छेद एवं विधवा विवाह प्रचलित है।
4. कथौड़ी मांसाहारी भी होते है। दैनिक खानपान में मक्का ज्वार बंटी आदि की रोटी प्याज आदि के साथ खाते है। चावल उनको प्रिय है पेय पदार्थो में दूध का प्रयोग बिल्कुल नहीं होता है।
5. स्त्रियां मराठी अंदाज में साड़ी पहनती है जिसे फड़का कहते है गहने पहनने का कोई रिवाज नहीं है।
6. शरीर पर गोदने का महत्व है।
7. इस जनजाति में मावलिया नृत्य एवं होली नृत्य प्रमुख है।
8. मावलिया नृत्य नवरात्रों में पुरूषों द्वारा किया जाता है। इसमें 10–12 पुरूष ढोलक, टापरा एवं बांसली की ताल पर गोल–गोल घूमते हुए नाचते है।
9. होली नृत्य में कथौड़ी स्त्रियां होली के अवसर पर एक दूसरे का हाथ पकड़कर नृत्य करती है। नृत्य के दौरान पिरामिड बनाती है। पुरूष उनकी संगत में ढोलक घोरिया, बांसली बजाते है।
10. कथौड़ी जनजाति के लोक वाद्य इनके वाद्य यंत्रों में गोरिडिया एवं थालीसर मुख्य है।

कंजर जनजाति

कंजर एक घुमक्कड कबीला है जो सम्पूर्ण उत्तर भारत की ग्राम्य और नागरिक जनसंख्या में छितराया हुआ है। ये सम्भवतः द्रविड़ मूल के है। 'कंजर' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत

'काननचर' से हुई भी बताई जाती है। एक किवदंती के अनुसार कंजर दिव्य पूर्वज मान गुरू की संतान है। मान अपनी पत्नी नथिया कंजरिन के साथ जंगल में रहता था। कंजर मुख्यतः कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ और उदयपुर आदि जिलों में पाये जाते है। कंजर जनजाति में मुखिया को पटेल कहा जाता है। इस जनजाति में चौथमाता एवं हनुमानजी को आराध्य देव माना जाता है। हाकम राजा का प्याला कंजर लोग हाकम राजा का प्याला पीकर कभी झूठ नहीं बोलते है। अतः किसी मामले की सफाई जानने हेतु लोग हाकम राजा के प्याले की कसम खाते है।

कंजर जाति की कुलदेवी जोगणियां माता है। कंजर महिलाएं नाचने–गाने में कुशल होती है। इनका चकरी नृत्य प्रसिद्ध है। इनका प्रमुख वाद्य ढोलक एवं मंजीरा है। कंजरों में व्यस्क विवाह का प्रचलन है। विवाह वधु मूल्य देकर होता है। रकम का भुगतान 2 किश्तों में होता है। पेशेवर नामधारी होने पर भी कंजरों ने किसी व्यवसाय विशेष को नहीं अपनाया। कुछ समय पूर्व तक ये यजमानी करते थे और गांव वालों का मनोरंजन करने के बदले धन और मवेशियों के रूप में वार्षिक दान पाते थे। कुछ कंजर स्त्रियां भीख मांगने का कार्य भी करती है। किन्तु वर्तमान में कंजर जनजाति के लोग अपने परम्परागत धन्धों को छोड़कर आर्थिक दृष्टि से अधिक लाभदायक व्यवसायों को अपना रहे है। समय के साथ–साथ इनकी वेशभूषा भी बदल रही है। खान–पान में ये मांसाहार का अधिक प्रयोग करते है।

कंजरों की कबीली पंचायत शक्तिशाली और सर्वमान्य सभा है। सभ्य समाज की दृष्टि से पेशेवर अपराधी माने जाने वाले कंजरों में भी कबीली नियमों के उल्लंघन की कड़ी सजा मिलती है। अपराध स्वीकृति के निराले और यातनापूर्ण ढंग अपनाएं जाते है। कंजर अपने देवी देवताओं के साथ हिन्दू देवी देवताओं की भी मनौती करते है।

सांसी जनजाति

सांसी एक खानाबदोश आपराधिक जनजाति है, जो भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र राजपुताना में केन्द्रित रही है। यह जनजाति अधिकांशतः राजस्थान के भरतपुर जिले में निवास करती है। सांसी लोग राजपूतों से अपनी वंशोत्पत्ति का दावा करते है, लेकिन लोककथा के अनुसार इनके पूर्वज बेड़िया थे जो यह एक आपराधिक जनजाति है। एक अन्य मत के अनुसार

सांसी जनजाति की उत्पत्ति 'सांसमल' नामक व्यक्ति से मानी जाती है। जीवन यापन के लिए पशुओं की चोरी तथा अन्य छोटे–छोटे अपराधों पर निर्भर रहने वाले सांसियों का उल्लेख अपराधी जनजाति के रूप में होता है। इस जाति के लोग खानाबदोश जीवन व्यतीत करते है। छोटी–छोटी हस्तशिल्प निर्माण से भी आजीविका चलाते है। कुकड़ी की रस्म के तहत सांसी जनजाति की युवती को विवाहोपरान्त अपनी चारित्रिक पवित्रता की परीक्षा देनी होती है। इस जनजाति में नारियल के गोले के आदान–प्रदान से सगाई की रस्म पूरी होती है। सांसी जनजाति भाखर बावजी को अपना आराध्यदेव मानती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सैनी, एस.के. (2012) ''राजस्थान के आदिवासी'' युनिक ट्रेडर्स जयपुर, पृ.सं. 15–16
2. दयाल, एम. (1968) ''द चेंजिंग पैटनर्स ऑफ इण्डिया'' इन्टरनेशनल ट्रेडर्स इकोनॉमिक ज्योग्राफी वॉल्युम 44, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर पृ.सं. 240–246
3. दोसी, शम्भुलाल/ व्यास, नरेन्द्र (1992) ''राजस्थान की अनुसूचित जनजातियां'' हिमांशु पब्लिकेशन्स उदयपुर, पृ.सं. 80–86
4. उत्प्रेति, हरीशचन्द्र, (1970) ''भारतीय जनजातियां'' सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, पृ.सं. 109–114
5. व्यास, गोपाल (1989) ''मेवाड़ का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन'' (18वीं व 19वीं शताब्दी) राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 20–41